काव्यविधा–पञ्चदलम् (तांका)

डॉ. ओमप्रकाश पारीक
एसोसिएट प्रोफेसर
कॉलेज शिक्षा निदेशालय, राजस्थान

(1)

कृषकेन हि
बीजेन सह भूमौ
उप्तं मन एवात्र
प्ररोहति ,वर्धते
पच्यते फलति च

किसान के द्वारा
बीज के साथ भूमि मे
बोया हुआ मन ही यहाँ
अंकुरित होता है, बढता है
पकता है और फलता है

*किसान का मन बीज बोने ,उगने,बढने पकने और अन्न निकाल कर घर लाने तक पल पल उस बीज के साथ ही रहता है उसकी चिन्ता ,हर्ष और आनन्द भी बीज के साथ जुड जाते हैं

(2)

प्रस्तरहृदि
संवेदना भवति
आर्द्रहृदयाः।
शैलाः प्रवाहयन्ति
दृग्भ्याम् अश्रूणां नद्यः

पत्थर दिल मे
संवेदना होती है
पिघले हृदयवाले
पर्वत बहाते हैं
आँखों से आँसुओं की नदियाँ

(3)

दम्पती मुदा।
पाणिग्रहणं कृत्वा।
तरतः अत्र
जीवनसागरं हि
परिणयनौकया

दम्पती प्रसन्नता से
हाथ मे हाथ पकडकर
तैरते हैं यहाँ
जीवनसागर को
विवाहरूपी नौका सें

*वास्तव मे हमारी विवाह संस्था का स्वरूप अत्यन्त आध्यात्मिक है। यहीं से परिवार बनता है। जो कि धर्म अर्थ काम मोक्ष देता है विवाह का अर्थ है विशेष रूप से एक दूसरे को वहन कर उर्ध्वगामी होना ।विवाह ही जीवन सागर को पार करने वाली उत्तम संस्था नौका है